हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में सामाजिक समस्या, सांप्रदायिकता का प्रस्तुतिकरण: दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० सचिन बत्रा [1] , डॉ० संजय कुमार श्रीवास्तव [2]
[1] प्रोफेसर, आई. एम. एस., नोएडा
[2] प्रोफेसर, जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश

यह अध्ययन चार प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार पत्रों- दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान में सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता के चित्रण की जांच करता है। शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि ये समाचार पत्र सामाजिक समस्याओं (जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता, गरीबी) और सांप्रदायिक तनाव जैसे मुद्दों को कैसे फ्रेम करते हैं और प्राथमिकता देते हैं, साथ ही जनमत को आकार देने में उनकी भूमिका का भी आकलन करते हैं। तुलनात्मक सामग्री विश्लेषण दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, अध्ययन एक निर्दिष्ट अवधि में सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों को दी गई आवृत्ति, स्वर और प्रमुखता का मूल्यांकन करता है। निष्कर्ष संपादकीय फोकस में भिन्नताओं को प्रकट करते हैं, कुछ समाचार पत्र विकास संबंधी चिंताओं पर जोर देते हैं जबकि अन्य सनसनीखेज या ध्रुवीकरण कथाओं को उजागर करते हैं। यह अध्ययन सामाजिक विभाजन को बढ़ाए बिना संवेदनशील विषयों को संबोधित करने में हिंदी प्रेस की नैतिक जिम्मेदारियों का भी पता लगाएगा । इन समाचार पत्रों की तुलना करके, शोध मीडिया पूर्वाग्रह, एजेंडा-सेटिंग और समाचार रिपोर्टिंग पर क्षेत्रीय और राजनीतिक कारकों के प्रभाव के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता करेगा । परिणाम मीडिया साक्षरता, जिम्मेदार पत्रकारिता, साम्प्रदायिकता और भारत जैसे विविध समाज में संतुलित रिपोर्टिंग की आवश्यकता पर व्यापक चर्चा में योगदान करेगा ।

कीवर्ड: सामाजिक समस्याएं, सांप्रदायिकता, हिंदी समाचार पत्र, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, मीडिया फ्रेमिंग, एजेंडा-सेटिंग, जिम्मेदार पत्रकारिता।

परिचय

जनमत को आकार देने और सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करने में मीडिया की भूमिका अच्छी तरह से प्रलेखित है। समाचार पत्र, जनसंचार के सबसे पुराने और सबसे व्यापक रूप से प्रसारित रूपों में से एक के रूप में, सामाजिक मुद्दों की रिपोर्टिंग और विश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में, जहाँ एक विविध सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य मौजूद है, हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता की प्रस्तुति सार्वजनिक धारणा और प्रवचन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। समाचारों की रूपरेखा, संपादकीय विकल्प और रिपोर्टिंग का समग्र लहजा इस बात में योगदान देता है कि पाठक सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों की व्याख्या कैसे करते हैं और उन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं।

भारत में हिंदी भाषा का प्रेस पाठकों की संख्या के मामले में प्रमुख स्थान रखता है, खासकर उत्तर भारतीय राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान में। दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका और हिंदुस्तान व्यापक पाठक संख्या और प्रभाव वाले अग्रणी समाचार पत्रों में से हैं। गरीबी, बेरोजगारी, लैंगिक भेदभाव,

जाति संघर्ष और सांप्रदायिक तनाव जैसे सामाजिक मुद्दों और साम्प्रदायिकता पर उनकी कवरेज अक्सर लोगों के दृष्टिकोण और सरकारी नीतियों को आकार देती है। जबकि मीडिया संगठन पत्रकारिता की तटस्थता और नैतिक रिपोर्टिंग का पालन करने का दावा करते हैं, भाषा, प्लेसमेंट और विशिष्ट कथाओं पर जोर देने की बारीकियाँ वैचारिक झुकाव और संभावित पूर्वाग्रहों को प्रकट करती हैं।

भारत में सांप्रदायिकता एक लंबे समय से चली आ रही समस्या रही है, जो अक्सर राजनीतिक बयानबाजी, सामाजिक संघर्षों और मीडिया चित्रणों में प्रकट होती है। सांप्रदायिक तनावों में वृद्धि और धर्म के राजनीतिकरण ने इन मुद्दों पर मीडिया कवरेज को विशेष रूप से महत्वपूर्ण बना दिया है। समाचार पत्र दोहरी भूमिका निभाते हैं - जबकि वे विभाजनकारी राजनीति और सामाजिक अन्याय के खिलाफ एक प्रहरी के रूप में काम करते हैं, वे रूढ़िवादिता को भी बनाए रख सकते हैं और चुनिंदा रिपोर्टिंग के माध्यम से ध्रुवीकरण में योगदान दे सकते हैं।

हिंदी अखबारों में सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता की रिपोर्टिंग कैसे की जाती है, यह समझना भारत जैसे बहुलवादी समाज में मीडिया की भूमिका का मूल्यांकन करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के निष्कर्ष मीडिया नैतिकता, पत्रकारिता की जिम्मेदारी और सामाजिक सद्भाव पर प्रेस कथाओं के प्रभाव पर व्यापक चर्चा में योगदान देंगे। यह इस बात की भी जानकारी देगा कि विभिन्न समाचार पत्र सामाजिक वास्तविकताओं का निर्माण कैसे करते हैं और क्या वे निष्पक्ष और संतुलित पत्रकारिता के सिद्धांतों के अनुरूप हैं। डिजिटल मीडिया के बढ़ते प्रभाव और समाचार उपभोग के बदलते पैटर्न को देखते हुए, यह अध्ययन समकालीन भारत में समाचार प्रस्तुति की बदलती गतिशीलता पर प्रासंगिक दृष्टिकोण प्रदान करेगा। यह शोध इस बात की आलोचनात्मक जाँच करने का प्रयास करता है कि दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान सामाजिक मुद्दों और सांप्रदायिकता का प्रतिनिधित्व कैसे करते हैं। उनके संपादकीय दृष्टिकोण, फ्रेमिंग तकनीकों और सार्वजनिक प्रवचन पर प्रभाव की तुलना करके, इस अध्ययन का उद्देश्य सामाजिक आख्यानों को आकार देने और सूचित नागरिकता को बढ़ावा देने में हिंदी प्रिंट मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डालना है।

साहित्य समीक्षा

1. सरबजीत सिंह, प्रो.(डा.) मनोज दयाल, **"सामाजिक समस्याओं से सम्बंधित समाचारों एवं विभिन्न प्रकार के समाचारों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनकी गुणवता पर बाजारीकरण के प्रभाव (उत्तर भारत से प्रकाशित तीन हिंदी दैनिकों पर एक अध्ययन)",** इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इनफार्मेशन मूवमेंट, 30 अगस्त, 2023 में प्रकाशित शोध के अनुसार इस बात की जांच करता है कि क्या भारत में हिंदी दैनिक समाचार पत्र सामाजिक मुद्दों से संबंधित समाचारों को प्राथमिकता देते हैं, उनकी मात्रा, गुणवत्ता और प्लेसमेंट का विश्लेषण करते हैं। यह जातिवाद, गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, धार्मिक विविधता, क्षेत्रवाद, लिंग भेदभाव और कृषि क्षेत्र की दुर्दशा जैसी सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित है। शोध में पंजाब केसरी, दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर जैसे समाचार पत्रों में ऐसी खबरों की गुणवत्ता पर व्यावसायीकरण के प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।
2. डॉ. वैशाली कपूर, प्रो. कुशल कुमार आर, **"मीडिया और धर्म: दो हिंदी अख़बारों - 'राजस्थान पत्रिका' और 'दैनिक भास्कर' में धर्म के कवरेज का विचित्र डिकोडिंग"** इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च, 2018, यह शोधपत्र इस बात की पड़ताल करता है कि मीडिया आउटलेट, विशेष रूप से राजस्थान पत्रिका और दैनिक भास्कर, धार्मिक मुद्दों को कैसे कवर करते हैं। यह विभिन्न दर्शकों पर मीडिया संदेशों के प्रभाव और समाचार पत्रों द्वारा विभिन्न सामाजिक वर्गों के प्रति खुद को उन्मुख करने के तरीके पर चर्चा करता है।

3. मीडिया फ्रेमिंग (एंटमैन, 1993) पर शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि समाचार आउटलेट किस तरह चुनिंदा मुद्दों को पेश करते हैं, जिससे जनता की धारणा प्रभावित होती है। मैककॉम्ब्स और शॉ (1972) का एजेंडा-सेटिंग सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि हिंदी समाचार पत्र अक्सर कुछ सामाजिक समस्याओं को प्राथमिकता देते हैं - जैसे जातिगत भेदभाव, गरीबी और लैंगिक असमानता - जबकि अन्य को कम करके पेश किया जाता है। अयंगर (1991) एपिसोडिक (घटना-आधारित) और विषयगत (संदर्भगत) फ्रेमिंग के बीच अंतर करते हैं, यह सुझाव देते हुए कि हिंदी समाचार पत्र अक्सर सांप्रदायिक हिंसा पर एपिसोडिक रिपोर्टिंग अपनाते हैं, जो जटिल मुद्दों को अधिक सरल बना सकता है।
4. जेफ़री (2000) उदारीकरण के बाद के भारत में हिंदी अख़बारों के तेज़ी से विस्तार पर चर्चा करते हैं, वाणिज्यिक उद्यमों और सामाजिक प्रभावकों के रूप में उनकी दोहरी भूमिका को देखते हुए। कुमार (2014) आगे तर्क देते हैं कि बाज़ार-संचालित पत्रकारिता कभी-कभी सनसनीखेज हो जाती है, ख़ास तौर पर अपराध और सांप्रदायिक रिपोर्टिंग में। नेयाज़ी (2010) इस बात की जाँच करते हैं कि स्थानीय अख़बार किस तरह आधुनिकीकरण को पारंपरिक मूल्यों के साथ संतुलित करते हैं, जिससे सामाजिक संघर्षों के उनके चित्रण पर असर पड़ता है।
5. मीडिया और सांप्रदायिकता के अंतर्संबंध का व्यापक अध्ययन किया गया है। राजगोपाल (2001) का तर्क है कि 1990 के दशक में हिंदू राष्ट्रवाद के उदय को मुख्यधारा के मीडिया ने बढ़ावा दिया, जिसमें हिंदी समाचार पत्र भी शामिल थे। उडुपा (2015) इस बात की पड़ताल करते हैं कि भारत में डिजिटल और प्रिंट मीडिया किस तरह सांप्रदायिक पहचान का निर्माण करते हैं, जो अक्सर रूढ़िवादिता को मजबूत करता है।
6. हैनसेन (1999) विश्लेषण करते हैं कि कैसे स्थानीय मीडिया धार्मिक पहचान के राजनीतिकरण में योगदान देता है, जबकि घासेम-फचंडी (2012) गुजरात के 2002 के दंगों में समाचार पत्रों की भूमिका की जांच करते हैं, यह दिखाते हुए कि रिपोर्टिंग कैसे तनाव बढ़ा सकती है। इसी तरह, वार्ष्णेय (2002) विभिन्न क्षेत्रों में सांप्रदायिक हिंसा कवरेज की तुलना करते हैं, संघर्ष-संवेदनशील रिपोर्टिंग में मीडिया की जिम्मेदारी पर जोर देते हैं।
7. बहुत कम अध्ययन प्रमुख हिंदी दैनिकों की सीधे तुलना करते हैं। निनान (2007) ने आकलन किया है कि दैनिक जागरण और हिंदुस्तान जैसे समाचार पत्र अपने राजनीतिक झुकाव और सामाजिक मुद्दों की कवरेज में कैसे भिन्न हैं। स्टॉलबर्ग (2002) ने राजस्थान पत्रिका के क्षेत्रीय फोकस की जांच की, और दैनिक भास्कर जैसे राष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ इसकी तुलना की।
8. ठाकुर (2018) हिंदी अख़बारों में अपराध रिपोर्टिंग का विश्लेषण करते हैं, जिसमें स्वर और जोर में भिन्नता पाई जाती है। चौधरी (2020) सांप्रदायिक दंगों की कवरेज की तुलना करते हुए कहते हैं कि दैनिक भास्कर अक्सर दैनिक जागरण की सनसनीखेज रिपोर्टिंग की तुलना में अधिक तटस्थ रुख अपनाता है। शर्मा (2019) अपने प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में लैंगिक मुद्दों पर हिंदुस्तान के अपेक्षाकृत प्रगतिशील रुख पर प्रकाश डालते हैं।
9. राव (2010) जैसे विद्वान संवेदनशील मुद्दों की रिपोर्टिंग में हिंदी अखबारों के सामने आने वाली नैतिक दुविधाओं पर जोर देते हैं। प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया की रिपोर्ट (2015, 2018) पक्षपातपूर्ण सांप्रदायिक रिपोर्टिंग की आलोचना करती है, और सख्त संपादकीय निगरानी का आग्रह करती है। मेहता (2016) अधिक जवाबदेही की मांग करते हैं, उनका तर्क है कि व्यावसायिक दबाव अक्सर पत्रकारिता की अखंडता को कमजोर करते हैं।

शोध प्रश्न

1. क्या हिंदी समाचार पत्र सामाजिक समस्याओं को पर्याप्त स्थान देते हैं?
2. क्या इनमें सांप्रदायिक या द्वेषपूर्ण भाषा का प्रयोग होता है?
3. कौन-सा समाचार पत्र सबसे अधिक संतुलित और निष्पक्ष रिपोर्टिंग करता है?

शोध का उद्देश्य

1- चार प्रमुख हिंदी दैनिकों में सामाजिक समस्याओं के प्रस्तुतिकरण का विश्लेषण करना।
2- सांप्रदायिक रिपोर्टिंग और द्वेषपूर्ण भाषा की पहचान करना।
3- पाठकों की प्रतिक्रिया के आधार पर समाचार पत्रों की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करना।

शोध विधि (Methodology)

समाचार पत्रों का चयन

- दैनिक भास्कर (राष्ट्रीय संस्करण)
- राजस्थान पत्रिका (राजस्थान-केंद्रित)
- दैनिक जागरण (उत्तर भारतीय प्रभुत्व)
- हिंदुस्तान (समग्र राष्ट्रीय दृष्टिकोण)

अध्ययन का प्रकार

- **गुणात्मक विश्लेषण :** दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान के 3 महीने (जनवरी-मार्च 2025) के समाचारों का विश्लेषण।
- **मात्रात्मक विश्लेषण (Survey):** 200 पाठकों का सर्वेक्षण।

नमूना चयन

- **समाचार पत्र:** दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान।
- **समयावधि:** 1 जनवरी 2025 से 31 मार्च 2025 तक।
- **सर्वेक्षण प्रतिभागी:** विभिन्न आयु, शिक्षा और व्यवसाय के 200 पाठक।

शोध का क्षेत्र - दिल्ली और राजस्थान के पाठक

अध्यन की सीमाएं

"हिंदी दैनिक समाचार पत्रों में सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता की प्रस्तुति: दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान का तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक वाले शोध में कई सीमाएँ हैं, जिनमें शामिल हैं:

1. अध्ययन केवल चार प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों पर केंद्रित है, जो हिंदी मीडिया के संपूर्ण स्पेक्ट्रम का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते हैं। अन्य क्षेत्रीय समाचार पत्र या डिजिटल समाचार प्लेटफ़ॉर्म अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सकते हैं।
2. यदि अध्ययन किसी विशिष्ट समय अवधि तक सीमित है, तो यह विकसित सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों के कारण रिपोर्टिंग शैलियों में दीर्घकालिक रुझानों या परिवर्तनों को ध्यान में नहीं रख सकता है।
3. अध्ययन केवल प्रिंट समाचार पत्रों पर केंद्रित है और डिजिटल पत्रकारिता, सोशल मीडिया प्रभाव या टेलीविज़न रिपोर्टिंग को ध्यान में नहीं रखता है, जो जनमत को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. चूँकि समाचार पत्र विभिन्न क्षेत्रीय दर्शकों को ध्यान में रखते हैं, इसलिए उनकी रिपोर्टिंग शैली भिन्न हो सकती है। यह अध्ययन इन क्षेत्रीय बारीकियों को पूरी तरह से नहीं पकड़ सकता है।
5. पिछले समाचार लेखों की उपलब्धता और पहुँच अध्ययन की व्यापकता को सीमित 6- अध्ययन सामग्री का विश्लेषण कर सकता है लेकिन यह नहीं कि पाठक इन समाचार प्रस्तुतियों को कैसे देखते हैं और उन पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, जो मीडिया कथाओं के वास्तविक दुनिया के प्रभाव को समझने में महत्वपूर्ण है।
6. अध्ययन सामग्री की तुलना करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता है लेकिन समाचार पत्रों में रिपोर्टिंग शैलियों में अंतर के पीछे के कारणों पर गहराई से विचार नहीं कर सकता है।

समाचार पत्रों द्वारा सामाजिक मुद्दों का कवरेज

क्रम संख्या	समाचार पत्र	कुल सामाजिक मुद्दों पर लेख	कवर किए गए शीर्ष 3 सामाजिक मुद्दे
1	दैनिक भास्कर	120	1. किसान विरोध प्रदर्शन 2. बेरोजगारी 3. महिलाओं के खिलाफ अपराध
2	राजस्थान पत्रिका	85	1. राजस्थान में विकास 2. शिक्षा सुधार 3. जातिगत हिंसा
3	दैनिक जागरण	95	1. यूपी अपराध दर 2. सरकारी कल्याणकारी योजनाएँ 3. प्रदूषण
4	हिंदुस्तान	145	1. स्वास्थ्य सेवा 2. ग्रामीण विकास 3. जातिगत भेदभाव

मुख्य अवलोकन:

1. हिंदुस्तान ने सामाजिक मुद्दों को सबसे अधिक स्थान दिया (145 लेख)।
2. दैनिक जागरण ने विकास की तुलना में अपराध/राजनीति पर अधिक ध्यान केंद्रित किया।
3. राजस्थान पत्रिका ने क्षेत्रीय मुद्दों (सूखा, शिक्षा) को प्राथमिकता दी।

समाचार पत्रों द्वारा सांप्रदायिक रिपोर्टिंग

क्रम संख्या	समाचार पत्र	सांप्रदायिक समाचारों की संख्या	स्वर (तटस्थ/सनसनीखेज)
1	दैनिक भास्कर	18	60% तटस्थ, 40% भावनात्मक
2	राजस्थान पत्रिका	12	75% तटस्थ, 25% आलोचनात्मक

3	दैनिक जागरण	25	40% neutral, 60% sensational
4	हिंदुस्तान	15	80% तटस्थ, 20% विश्लेषणात्मक

मुख्य अवलोकन:

1. दैनिक जागरण में सबसे अधिक सांप्रदायिक कवरेज (25 लेख) थे, जिनमें अक्सर ध्रुवीकरण करने वाले शीर्षक होते थे।
2. हिंदुस्तान और राजस्थान पत्रिका अधिक तथ्य-आधारित और तटस्थ थे।
3. दैनिक भास्कर ने सांप्रदायिक रिपोर्टों में कभी-कभी भावनात्मक भाषा का इस्तेमाल किया।

जनवरी से मार्च 2025 के बीच, इन चारों हिंदी दैनिक समाचार पत्रों ने सामाजिक समस्याओं और साम्प्रदायिकता से जुड़े मुद्दों को गंभीरता से लेते हुए व्यापक कवरेज दी है। उनके प्रस्तुतीकरण में भले ही शैली और दृष्टिकोण में अंतर हो, लेकिन सभी ने समाज में जागरूकता बढ़ाने और सूचित नागरिकता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

- **दैनिक भास्कर** ने सामाजिक मुद्दों पर गहन विश्लेषण और विस्तृत रिपोर्टिंग पर जोर दिया, जिससे पाठकों को समस्याओं की गहराई से समझ मिली।
- **राजस्थान पत्रिका** ने सरकारी नीतियों और योजनाओं की विस्तृत जानकारी प्रदान की, जिससे पाठकों को सरकारी प्रयासों की स्पष्ट तस्वीर मिली।
- **दैनिक जागरण** ने सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ साम्प्रदायिक मुद्दों पर भी संतुलित रिपोर्टिंग की, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ी।
- **हिन्दुस्तान** ने सामाजिक और साम्प्रदायिक दोनों प्रकार के मुद्दों पर संवेदनशीलता और निष्पक्षता के साथ समाचार प्रस्तुत किए, जिससे पाठकों को विश्वसनीय जानकारी मिली।

विश्लेषण

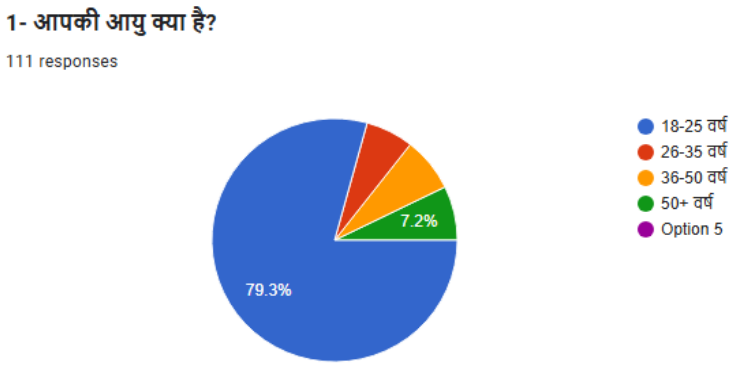

2- आपकी शैक्षिक योग्यता क्या है?

111 responses

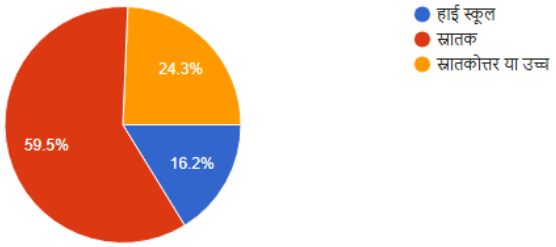

3- आपका व्यवसाय क्या है?

111 responses

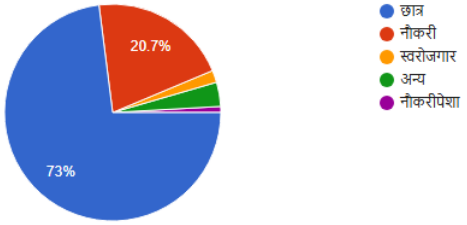

4- आप किस प्रकार के क्षेत्र में रहते हैं?

111 responses

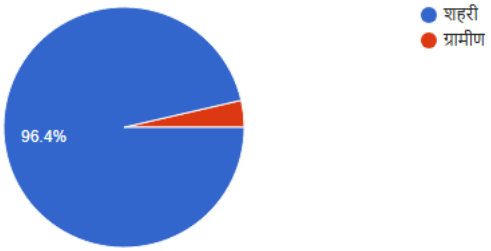

5- क्या आप नियमित रूप से हिंदी समाचार पत्र पढ़ते हैं?

111 responses

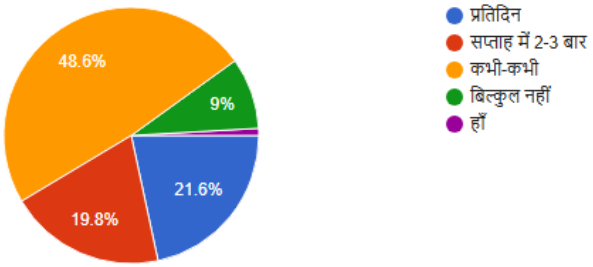

6- आपको कौन-सा समाचार पत्र सबसे विश्वसनीय लगता है?

110 responses

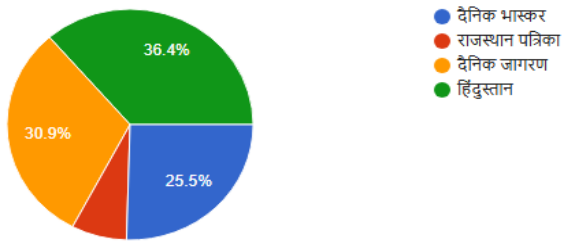

7- आप समाचार पत्र किस रूप में पढ़ते हैं?

110 responses

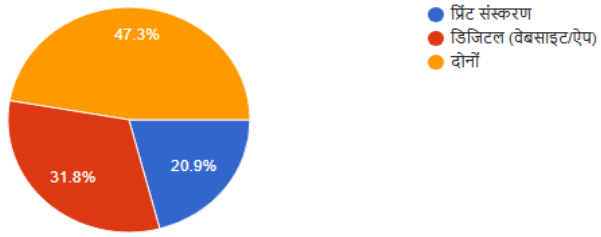

8- आप समाचार पत्रों में किस प्रकार की सामग्री को प्राथमिकता देते हैं?

111 responses

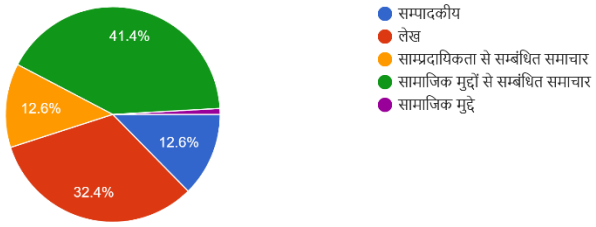

110 उत्तरदाताओं के बीच सामाजिक मुद्दों से जुड़ी खबरें अखबारों में सबसे ज़्यादा पसंद की जाने वाली सामग्री हैं, उसके बाद सामान्य लेख और संपादकीय हैं। यह दर्शाता है कि पाठकों की सामाजिक सरोकारों और समसामयिक मामलों को दर्शाने वाली सामग्री में गहरी दिलचस्पी है।

समाचार पत्रों में पाठकों द्वारा देखी जाने वाली सामग्री के प्रकार के बारे में उनकी प्राथमिकताओं को समझने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया। सर्वेक्षण में कुल 110 उत्तरदाताओं ने भाग लिया। 14 उत्तरदाताओं (12.7%) ने बताया कि वे संपादकीय पढ़ते हैं। यह राय के लेखों, आलोचनात्मक विश्लेषण और विशेषज्ञ दृष्टिकोणों में मध्यम रुचि को दर्शाता है। 36 उत्तरदाताओं (32.7%) ने कहा कि वे सामान्य लेख पढ़ना पसंद करते हैं। इससे पता चलता है कि पाठकों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कई विषयों पर सूचनात्मक और वर्णनात्मक सामग्री को महत्व देता है। 14 उत्तरदाताओं (12.7%) ने सांप्रदायिकता से संबंधित समाचारों के लिए प्राथमिकता का संकेत दिया। यह संवेदनशील सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों में उल्लेखनीय रुचि को दर्शाता है। 46 उत्तरदाताओं (41.8%) ने कहा कि वे सामाजिक मुद्दों से संबंधित समाचार पढ़ते हैं। 1 अतिरिक्त उत्तरदाता (0.9%) ने भी यही उल्लेख किया, संभवतः डुप्लिकेट या थोड़े अलग शब्दों में उत्तर के रूप में। यदि दोनों प्रविष्टियाँ एक ही प्रकार की विषय-वस्तु से संबंधित हैं, तो सामाजिक

मुद्दों से संबंधित समाचारों के लिए कुल पाठक संख्या 47 उत्तरदाता हो जाती है, जो कुल का 42.7% है - जो सभी श्रेणियों में सबसे अधिक है।

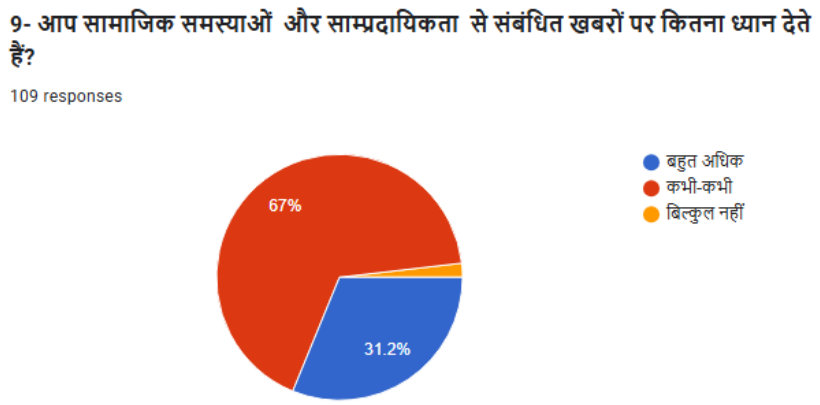

उत्तरदाताओं के एक बड़े हिस्से (109 में से 74, या 67%) ने बताया कि वे सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता से संबंधित समाचारों पर कभी ध्यान नहीं देते हैं। यह सामान्य दर्शकों के बीच महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों में महत्वपूर्ण वियोग या रुचि की कमी को इंगित करता है। संभावित कारणों में मीडिया से थकान, मीडिया में अविश्वास, मनोरंजन या जीवन शैली की सामग्री के लिए प्राथमिकता, या उदासीनता की एक सामान्य भावना शामिल हो सकती है। लगभग 31% (34 उत्तरदाताओं) ने कहा कि वे बहुत अधिक ध्यान देते हैं, जो आबादी के एक अत्यधिक जागरूक और चिंतित हिस्से को दर्शाता है। ये व्यक्ति सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक सक्रिय हो सकते हैं, संभवतः केवल जानकारी के लिए नहीं बल्कि कार्रवाई या वकालत के उद्देश्यों के लिए समाचार का उपभोग करते हैं। केवल 2 उत्तरदाताओं (1.8%) ने कहा कि वे किसी भी मुद्दे पर ध्यान नहीं देते हैं

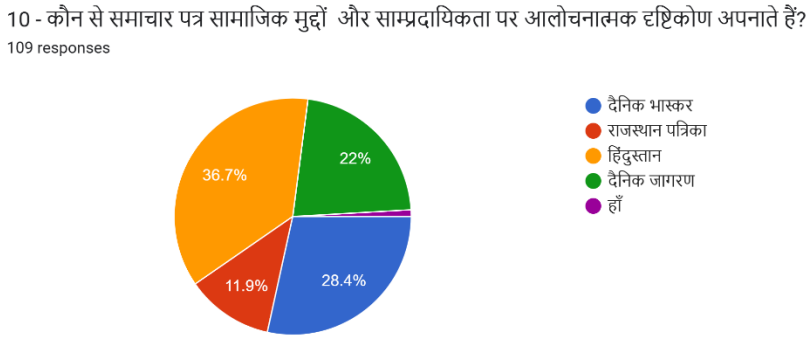

109 उत्तरदाताओं में से 40 (36.7%) के अनुसार, हिंदुस्तान को सामाजिक मुद्दों और सांप्रदायिकता से सबसे अधिक आलोचनात्मक रूप से जुड़ने वाला अख़बार माना जाता है। यह प्रकाशन के संपादकीय रुख, नागरिक मामलों पर लगातार रिपोर्टिंग और संवेदनशील विषयों से निपटने में इसके अपेक्षाकृत संतुलित लहजे को दर्शाता है। 31 उत्तरदाताओं (28.4%) ने महसूस किया कि दैनिक भास्कर ऐसे मुद्दों पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखता है। भास्कर अपने व्यापक पाठक वर्ग और कभी-कभी बोल्ड रिपोर्टिंग के लिए जाना जाता है, खासकर क्षेत्रीय संस्करणों में, जो इस धारणा में योगदान दे सकता है। भारत में सबसे अधिक प्रसारित होने वाले दैनिक समाचार पत्रों में से एक होने के बावजूद, दैनिक जागरण को 24 उत्तरदाताओं (22%) ने चुना। यह मध्यम आंकड़ा यह सुझाव दे सकता है कि हालांकि अखबार लोकप्रिय है, पाठक संवेदनशील मुद्दों पर इसके रुख को कम आलोचनात्मक

या अधिक तटस्थ मान सकते हैं। केवल 13 उत्तरदाताओं (11.9%) ने राजस्थान पत्रिका को इन विषयों पर आलोचनात्मक रूप से मुखर माना। यह इसके मुख्य रूप से क्षेत्रीय फोकस, कम राष्ट्रीय प्रदर्शन या पाठकों की धारणा के कारण हो सकता है कि यह राष्ट्रीय सामाजिक टिप्पणी की तुलना में स्थानीय/क्षेत्रीय समाचारों पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है।

11- कौन-सा समाचार पत्र सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों को सबसे सटीक रूप में प्रस्तुत करता है?

108 responses

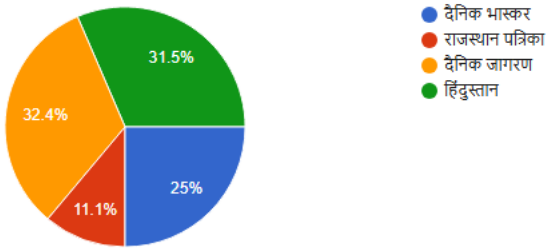

इस प्रश्न का उद्देश्य यह आकलन करना था कि सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों के सटीक प्रतिनिधित्व के लिए पाठक किस समाचार पत्र पर सबसे अधिक भरोसा करते हैं - दो ऐसे क्षेत्र जहां जिम्मेदार पत्रकारिता सार्वजनिक समझ और राय को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 108 प्रतिभागियों के साथ, यह डेटा दर्शाता है कि दर्शक समाचार कवरेज में विश्वसनीयता, निष्पक्षता और तथ्यात्मक शुद्धता का मूल्यांकन कैसे करते हैं। सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों पर सबसे सटीक रिपोर्टिंग के मामले में दैनिक जागरण 35,(32.4%) हिंदुस्तान 34,(31.5%) से थोड़ा आगे है। उनके बीच न्यूनतम अंतर यह दर्शाता है कि दोनों प्रकाशनों को सूचना के अपेक्षाकृत विश्वसनीय और भरोसेमंद स्रोत के रूप में देखा जाता है, संभवतः उनकी व्यापक पहुंच, कवरेज में निरंतरता और संपादकीय मानकों के कारण। 28 उत्तरदाताओं (25%) के साथ, दैनिक भास्कर भी पाठकों के बीच काफी विश्वसनीय है, हालांकि शीर्ष दो से थोड़ा पीछे है। क्षेत्रीय गहराई और राष्ट्रीय उपस्थिति का इसका मिश्रण संतुलित और सटीक रिपोर्टिंग की इस धारणा में योगदान दे सकता है। 11 उत्तरदाताओं (11.1%) ने राजस्थान पत्रिका को चुना, जो दर्शाता है कि भले ही इसकी राष्ट्रीय उपस्थिति कम हो, लेकिन पाठकों के एक वर्ग के बीच इसकी विश्वसनीयता है, संभवतः इसके मुख्य पाठक क्षेत्रों में।

12- क्या आपको लगता है कि समाचार पत्र सामाजिक सद्भाव बढ़ाने में सहायक हैं?

109 responses

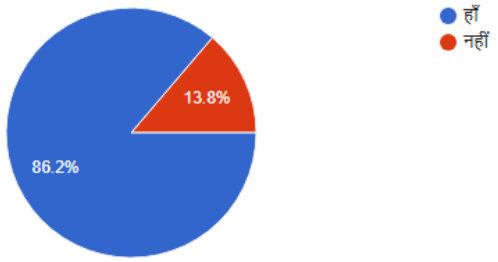

इस प्रश्न का उद्देश्य सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने में समाचार पत्रों की कथित भूमिका का आकलन करना था - एक विविधतापूर्ण समाज में एक महत्वपूर्ण कारक जहां जाति, धर्म, वर्ग और क्षेत्रीय मतभेदों के मुद्दे सामाजिक

संबंधों को प्रभावित कर सकते हैं। परिणाम दर्शाते हैं कि लोग समाचार पत्रों को न केवल सूचना के स्रोत के रूप में देखते हैं, बल्कि सकारात्मक सामाजिक प्रभाव के एजेंट के रूप में भी देखते हैं। अधिकांश (86.2%) लोगों का मानना है कि समाचार-पत्र सामाजिक सद्भाव में सकारात्मक योगदान देते हैं, जो प्रेस की रचनात्मक क्षमता में जनता के भरोसे को दर्शाता है। यह भरोसा इस बात से उपजा हो सकता है कि समाचार-पत्र किस तरह सामाजिक मुद्दों को कवर करते हैं, सांप्रदायिक एकता को उजागर करते हैं, समावेशी मूल्यों को बढ़ावा देते हैं और विविध आवाज़ों के लिए मंच प्रदान करते हैं। केवल 15 उत्तरदाताओं (13.8%) ने महसूस किया कि समाचार-पत्र सामाजिक सद्भाव में योगदान नहीं देते हैं। यह निम्न को दर्शा सकता है:

1. मीडिया में अविश्वास।
2. पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग या सनसनीखेजता के अनुभव।
3. यह धारणा कि समाचार-पत्र कभी-कभी एकजुट करने के बजाय ध्रुवीकरण करते हैं।
4. न्यूनतम अनिश्चितता या गैर-संलग्नता ।

विश्लेषण से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि अधिकांश पाठक समाचार पत्रों को सामाजिक सद्भाव में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता के रूप में देखते हैं। 86% से अधिक उत्तरदाताओं ने इस बात की पुष्टि की है, जागरूकता फैलाने, सामुदायिक विभाजन को पाटने और आपसी समझ को बढ़ावा देने में प्रिंट मीडिया की भूमिका का अत्यधिक सम्मान किया जाता है। हालाँकि, इस विश्वास को बनाए रखने के लिए, समाचार पत्रों को नैतिक पत्रकारिता के मानकों का पालन करना जारी रखना चाहिए, सनसनीखेजता से बचना चाहिए और समाज की विविधता और एकता को दर्शाने वाले समावेशी आख्यानों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना चाहिए।

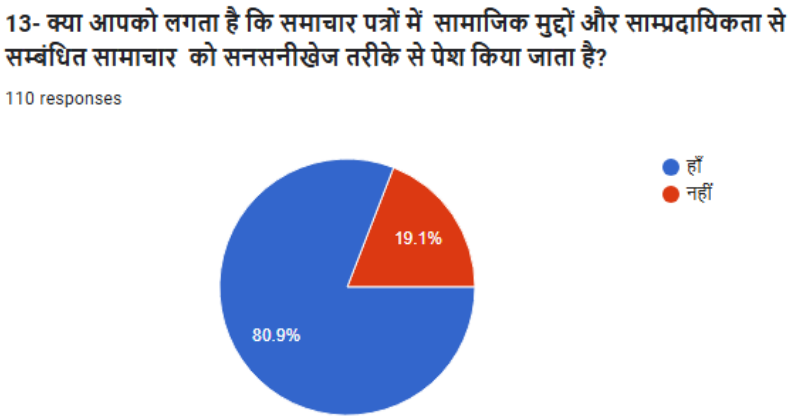

यह प्रश्न सामाजिक मुद्दों और सांप्रदायिकता पर समाचार पत्रों की रिपोर्टिंग के बारे में जनता की धारणा का पता लगाता है - क्या ऐसी रिपोर्टिंग सनसनीखेज है या वस्तुनिष्ठ और जिम्मेदारी से प्रस्तुत की गई है। परिणाम इस बारे में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं कि पाठक संवेदनशील विषयों पर मीडिया कवरेज के लहजे, रूपरेखा और इरादे की व्याख्या कैसे करते हैं। उत्तरदाताओं का एक बड़ा बहुमत (80.9%) मानता है कि समाचार पत्र सामाजिक मुद्दों और सांप्रदायिकता से संबंधित समाचारों को सनसनीखेज बनाते हैं। इससे लोगों की चिंता का पता चलता है कि मीडिया गहराई से ज़्यादा नाटकीयता को प्राथमिकता दे सकता है, जिससे समझ को बढ़ावा देने के बजाय तनाव बढ़ सकता है। 19.1% उत्तरदाताओं का मानना है कि समाचार पत्र ऐसी खबरों को सनसनीखेज नहीं बनाते हैं। ये पाठक कुछ प्रकाशनों की विश्वसनीयता और व्यावसायिकता पर भरोसा कर सकते हैं या महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर करने के लिए कवरेज को ज़रूरी मान सकते हैं।

14- क्या आपको लगता है कि समाचार पत्र सामाजिक बदलाव लाने में सक्षम हैं?

109 responses

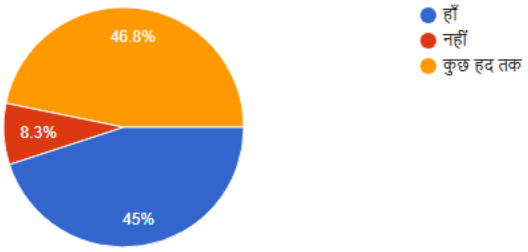

यह प्रश्न इस बात की पड़ताल करता है कि समाज को आकार देने और सामाजिक परिवर्तन लाने में समाचार-पत्रों के प्रभाव और शक्ति को जनता किस तरह से देखती है - चाहे जागरूकता बढ़ाने के माध्यम से, अन्याय को चुनौती देने के माध्यम से, या कार्रवाई को प्रेरित करने के माध्यम से। जवाब मीडिया की भूमिका की सूक्ष्म समझ को दर्शाते हैं, जो एक सूचनादाता और एक परिवर्तन एजेंट दोनों के रूप में है। 52 उत्तरदाताओं (46.8%) का मानना है कि समाचार पत्र कुछ हद तक सामाजिक बदलाव ला सकते हैं, जो उनकी क्षमता की मान्यता को दर्शाता है लेकिन साथ ही उनकी सीमाओं के बारे में जागरूकता भी है - जैसे संपादकीय पूर्वाग्रह, वाणिज्यिक हित, या राजनीतिक दबाव। इससे पता चलता है कि पाठक समाचार पत्रों को एकमात्र चालक के बजाय बदलाव की प्रक्रिया में सहायक एजेंट के रूप में देखते हैं। 49 उत्तरदाता (45.00%) पूरी तरह से सहमत हैं कि समाचार पत्र सामाजिक बदलाव लाने में सक्षम हैं। यह मीडिया की सूचना देने, जुटाने और कार्रवाई को प्रेरित करने की शक्ति में भरोसा दिखाता है। ये पाठक समाचार पत्रों को ऐसे मंच के रूप में देख सकते हैं जो हाशिए के समुदायों को आवाज देते हैं, अन्याय को उजागर करते हैं, और सार्वजनिक नीति और राय को प्रभावित करते हैं। केवल 9 उत्तरदाताओं (8.3%) का मानना है कि समाचार पत्र सामाजिक बदलाव में योगदान नहीं करते हैं

15- क्या आपने कभी हिंदी समाचार पत्रों में द्वेषपूर्ण भाषा (Hate Speech) देखी है?

110 responses

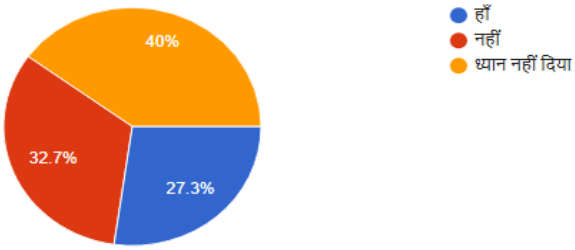

16-किस समाचार पत्र में आपने सांप्रदायिक विवादों को सबसे अधिक देखा है?

110 responses

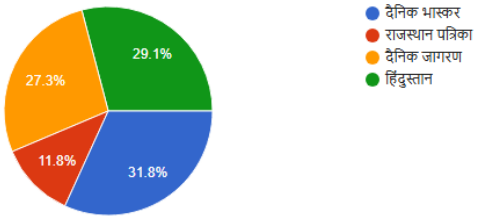

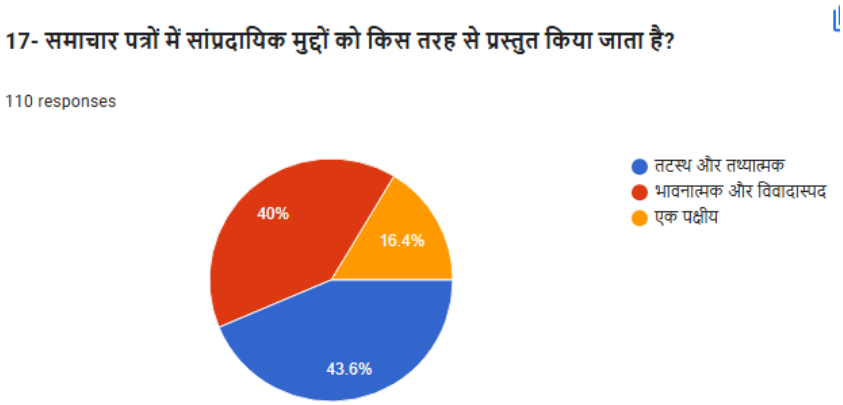

इस प्रश्न का उद्देश्य यह समझना था कि सांप्रदायिक मुद्दों को कवर करते समय पाठक समाचार पत्रों के लहजे, दृष्टिकोण और निष्पक्षता को कैसे देखते हैं - जो अक्सर संवेदनशील होते हैं और सार्वजनिक भावनाओं को प्रभावित करने में सक्षम होते हैं। जवाबों से मीडिया द्वारा ऐसे विषयों को संभालने के तरीके में अलग-अलग स्तर के भरोसे और संदेह का पता चलता है। कुल 48 उत्तरदाताओं (43.6%) का मानना है कि सांप्रदायिक मुद्दों को तटस्थ और तथ्यात्मक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। यह समाचार पत्रों के पत्रकारिता के मानकों में विश्वास के स्तर को दर्शाता है - विशेष रूप से संवेदनशील मामलों पर भी वस्तुनिष्ठ बने रहने की उनकी क्षमता में। ये पाठक नैतिक और पेशेवर रिपोर्टिंग के लिए जाने जाने वाले प्रकाशनों का अनुसरण कर सकते हैं। 45 उत्तरदाताओं (40.00%) को लगता है कि सांप्रदायिक मुद्दों को भावनात्मक और विवादास्पद तरीके से रिपोर्ट किया जाता है। इसका मतलब यह है कि पाठकों का एक महत्वपूर्ण वर्ग कवरेज को सनसनीखेज मानता यह समूह संभवतः विभिन्न समुदायों या दृष्टिकोणों को कवर करने के तरीके में प्रतिनिधित्व या निष्पक्षता का अभाव देखता है। 18 उत्तरदाताओं (16.4%) का मानना है कि कवरेज एकतरफा है, जो पक्षपात, राजनीतिक गठबंधन या एजेंडा-संचालित रिपोर्टिंग के बारे में चिंता दर्शाता है। इस समूह को संभवतः विभिन्न समुदायों या दृष्टिकोणों को कवर करने के तरीके में प्रतिनिधित्व या निष्पक्षता की कमी दिखती है।

निष्कर्ष

दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका, दैनिक जागरण और हिंदुस्तान के तुलनात्मक अध्ययन से इस बात की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है कि प्रमुख हिंदी दैनिक समाचार पत्र सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता से जुड़े मुद्दों को किस तरह पेश करते हैं। भारत की आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए सूचना के प्राथमिक स्रोत के रूप में, ये समाचार पत्र जनमत को आकार देने, जागरूकता को बढ़ावा देने और सामाजिक दृष्टिकोण को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक समाचार पत्र सामाजिक रूप से संवेदनशील विषयों को कवर करने में अलग-अलग संपादकीय प्रवृत्ति और दृष्टिकोण प्रदर्शित करता है। हिंदुस्तान और दैनिक जागरण ऐसे मुद्दों को सटीकता और गहराई से प्रस्तुत करने के लिए सबसे अधिक पहचाने जाने वाले समाचार पत्रों के रूप में उभरे, जबकि दैनिक भास्कर को सांप्रदायिक मामलों पर अपने आलोचनात्मक दृष्टिकोण के लिए पहचाना गया। राजस्थान पत्रिका, हालांकि पाठकों की पसंद में थोड़ा पीछे है, फिर भी दर्शकों के एक हिस्से के बीच इसकी विश्वसनीयता बनी हुई है। उत्तरदाताओं के एक महत्वपूर्ण हिस्से ने महसूस किया कि समाचार पत्र सामाजिक और सांप्रदायिक मुद्दों से संबंधित समाचारों को सनसनीखेज तरीके से प्रस्तुत करते हैं, अक्सर कथा को नाटकीय रूप देते हैं। जबकि कुछ समाचार पत्रों को तटस्थ और तथ्यात्मक रिपोर्टिंग के लिए सराहा जाता है, वहीं अन्य को भावनात्मक या विवादास्पद कोणों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए माना जाता है, जो संभावित रूप

से सामाजिक विभाजन को पाटने के बजाय बढ़ा सकते हैं। इन चिंताओं के बावजूद, अधिकांश पाठक अभी भी मानते हैं कि समाचार पत्र सीधे या कुछ हद तक सामाजिक परिवर्तन लाने में सक्षम हैं। यह इस धारणा को पुष्ट करता है कि प्रेस को जागरूकता और परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा जाता है, खासकर जब रिपोर्टिंग नैतिकता, सटीकता और जिम्मेदारी से निर्देशित होती है।

इसके अलावा, शोध इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि पाठक मीडिया के निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं हैं। वे सामग्री का आलोचनात्मक मूल्यांकन करते हैं और समाचार रिपोर्टिंग में पूर्वाग्रह, लहजे और रूपरेखा के बारे में तेजी से जागरूक होते हैं। यह बढ़ती जागरूकता हिंदी अखबारों के लिए एक चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है - विश्वास का पुनर्निर्माण करना, जुड़ाव को गहरा करना और निष्पक्ष, संतुलित और सामाजिक रूप से रचनात्मक पत्रकारिता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करना। जबकि अध्ययन किए गए समाचार पत्र सामाजिक समस्याओं और सांप्रदायिकता पर चर्चा में सार्थक योगदान देते हैं, जिम्मेदार रिपोर्टिंग में अधिक निरंतरता की आवश्यकता बनी हुई है। पत्रकारिता के मानकों को बनाए रखना और ऐसे जटिल मुद्दों से निपटने में संवेदनशीलता को बढ़ावा देना मीडिया के लिए अपने लोकतांत्रिक और सामाजिक कार्य को सही मायने में पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है।

References:

1. Kumar, K. (2011). Mass Communication in India (4th ed.). Jaico Publishing House.
2. Mehta, N. (2008). India on Television: How Satellite News Channels Have Changed the Way We Think and Act. HarperCollins.
3. Jeffrey, R. (2000). India's Newspaper Revolution: Capitalism, Politics and the Indian-Language Press, 1977–99. Oxford University Press.
4. Ninan, S. (2007). Headline Hunting: The Inside Story of India's News Business. Penguin Books India.
5. Thussu, D. K. (2009). News as Entertainment: The Rise of Global Infotainment. SAGE Publications.
6. Bansal, R. (2015). Media and Communalism in India: A Critical Analysis. Journal of Media Studies, 9(1), 45–58.
7. Sharma, A. (2020). The Role of Hindi Print Media in Framing Social Problems. Indian Journal of Communication Review, 12(2), 122–138.
8. Raghav, S. (2019). Comparative Study of the Presentation of Social Issues in National Dailies. Media Watch, 10(3), 398–410. https://doi.org/10.15655/mw/2020/v11i1/195558
9. Chatterjee, P. (2017). Political Bias and Communal Tensions in Print Media. International Journal of Communication and Media Studies, 7(4), 75–84.
10. Verma, T. (2021). Communal Reporting in Hindi Newspapers: A Framing Analysis. Global Media Journal – Indian Edition, 13(1), 88–101.
11. Dainik Jagran. (2024, August 15). साम्प्रदायिक तनाव के पीछे कौन? Retrieved from https://www.jagran.com

12. Dainik Jagran. (2023, December 5). सामाजिक समस्याओं पर सरकार की नीतियां नाकाम. Retrieved from https://www.jagran.com
13. Rajasthan Patrika. (2024, June 18). बेरोजगारी के आंकड़े और सरकार की नीतियां. Retrieved from https://www.patrika.com
14. Rajasthan Patrika. (2023, October 2). सांप्रदायिक घटनाओं में इज़ाफ़ा: क्या कहती है पुलिस रिपोर्ट? Retrieved from https://www.patrika.com
15. Dainik Bhaskar. (2023, November 11). सामाजिक एकता को चुनौती देती घटनाएं. Retrieved from https://www.bhaskar.com
16. Dainik Bhaskar. (2024, January 22). युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी: एक जमीनी रिपोर्ट. Retrieved from https://www.bhaskar.com
17. Hindustan. (2024, September 8). धार्मिक असहिष्णुता पर बढ़ती चिंता. Retrieved from https://www.livehindustan.com
18. Hindustan. (2023, July 10). सामाजिक न्याय और मीडिया की भूमिका. Retrieved from https://www.livehindustan.com